प्रेस विज्ञप्ति

ऐतिहासिक सिन्धी सम्मेलन का शुभारम्भ

गुड़गाँव, 22 नवम्बरः ब्रह्माकुमारीज ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर बहोड़ाकलाँ में तीन दिवसीय ऐतिहासिक सिन्धी सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी, प्योरिटी मासिक पत्रिका के मुख्य सम्पादक ब्र. कु. ब्रजमोहन, ओ.आर.सी. की निदेशिका, ब्र.कु.आशा, हिन्दुजा ग्रुप ऑफ कम्पनीज़ के अध्यक्ष भ्राता एस.पी.हिन्दुजा एवं प्रसिद्ध फिल्म र्निमाता भ्राता पहलाज निहलानी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में देश विदेश के लगभग 1500 सिन्धीयों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य बताते हुए ब्र.कु.आशा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्था की शुरूआत सिन्ध से सन् 1936 में हुई थी। इसके साकार संस्थापक दादा लेखराज कृपलानी भी सिन्धी थे। दादा लेखराज कृपलानी ने परमात्मा की शक्ति का स्वयं अपने जीवन में अनुभव कर अनेकों को परमात्मा की राह पर चलने के लिये प्रेरणा दी उसी प्रेरणा को आप लोगों तक पहुँचाने के लिए एवं परमात्म शक्ति की अनुभूति कराने के लिए सिन्धी सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

हिन्दुजा ग्रुप कम्पनीज़ के अध्यक्ष भ्राता एस.पी.हिन्दुजा ने कहा कि आज परमात्मा को अलग अलग नाम रूप से जानते है लेकिन जो सुख शान्ति हमें मिलनी चाहिये वह मिल नही पाती जिसका कारण है कि हम परमात्मा को मानते तो है लेकिन परमात्मा की मानते नहीं अर्थात परमात्मा के बताये हुए रास्ते पर चलते नहीं हैं इसलिये परमात्मा की शक्ति का अनुभव हमें नही हो पाता और हम दिनोंदिन परमात्मा से दूर होते जा रहे हैं। इसलिये इस सम्मेलन का बहुत महत्त्व है।

प्रसिद्ध फिल्म र्निमाता भ्राता पहलाज निहलानी ने कहा कि मेडिटेशन हमारे जीवन से तनाव को दूर करता है, मैं स्वयं काफी व्यस्त होने के कारण तनाव का अनुभव करता हूँ किन्तु आज पहली बार मैने मेडिटेशन कर शान्ति का अनुभव किया तथा आगे भी मैं मेडिटेशन करता रहूँगा। उन्होने कहा कि आत्मा का मैल साफ करने के लिये परमात्मा को याद करना आवश्यक है।

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी ने कहा कि मैं बचपन में कहा करती थी कि मुझे मीरा नहीं गोपी बनना है जिसका वर्णन भागवत में है। उन्होंने अपना आध्यात्मिक परिचय देते हुए कहा कि मेरा परिचय इन तीन में है। एक, मैं कबूतर हूँ। जैसे प्राचीन समय में कबूतर संदेश वाहक का कार्य करते थे तो उसी प्रकार मुझे भगवान का संदेश वाहक बन सबको शान्ति व प्रेम का संदेश देना है। दूसरा, मैं तोता हूँ। जैसे तोता अपने स्वामी द्वारा कहे शब्दों को रीपीट करता रहता है उसी प्रकार मैं भी भगवान के कहे शब्दों को बोलती रहती हूँ। तीसरा, मैं कटपुतली हूँ। मेरी जीवन की डोर ईश्वर के हाथों में है। वह जैसे नचाता है मैं वैसे नाचती रहती हूँ।

उन्होंने अपना जीवन का लक्ष्य बताते हुए कहा कि हे नर तू ऐसी करनी कर जो नारायण सम बन जाए और हे नारी तू ऐसी करनी कर जो लक्ष्मी सम बन जाए। ऐसा बनने के लिए लक्ष्य के साथ लक्षण भी धारण करने हैं जिसके लिए स्वयं को जानना और परमात्मा को पहचानना आवश्यक है क्योंकि परमात्मा गुणों व शक्तियों का सागर एवं दाता है।

कार्यक्रम में टी.वी. व सिने कलाकार कु. मेघा अदलखा, उमा लल्लन, रेडियो सिंगर भ्राता इन्दु प्रकाश ने अपने रूहानी गीत संगीत द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया।

(बी.के. आशा)
निदेशिका, ओ.आर.सी.